इकाई 1 सुबन्त प्रकरण – अजन्त पुँल्लिङ्ग (अकारान्त, इकारान्त) राम एवं हरि

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 राम शब्द की रूपसिद्धि में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

1.3 राम शब्द की रूपसिद्धि की प्रकिया

1.4 हरि शब्द रूपसिद्धि में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

1.5 हरि शब्द की रूपसिद्धि की प्रकिया

1.6 सारांश

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.8 अभ्यास प्रश्न

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप –

- लघुसिद्धान्तकौमुदी के सुबन्त प्रकरण के अजन्त पुँल्लिङ्ग भाग से परिचित हो सकेंगे।
- अकारान्त, इकारान्त शब्दों के पुँल्लिङ्ग रूपों को जान सकेंगे तथा उनका प्रयोग कर सकेंगे।
- अकारान्त, इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों की रूपसिद्धि की प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- अकारान्त, इकारान्त पुँल्लिङ्ग रूप बनाने के विशेष नियम, अपवाद एवं वार्तिकों का भी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- सूत्रों के अर्थ एवं व्याख्या को समझ सकेंगे; तथा
- नये पदों की प्रकृति एवं प्रत्ययों को जान सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! व्याकरण के पाठ्यक्रम का यह प्रथम खण्ड है। इस खण्ड में आप अकारान्त, इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप किस प्रकार बनते हैं, इसका अध्ययन करेंगे। इस इकाई में आप प्रातिपदिकों तथा सुप् प्रत्ययों को जान सकेंगे। स्वादि प्रत्यय अपने प्रातिपदिक रूप प्रकृति से पहले लगते हैं, इसको भी भली–भाँति समझ सकेंगे। इस इकाई में आप अकारान्त

राम और इकारान्त हरि शब्द के रूपसिद्धि की प्रक्रिया में प्रयुक्त सूत्रों एवं रूपसिद्धि को समझ सकेंगे।

1.2 राम शब्द की रूपसिद्धि में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

सूत्र – अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम् 1/2/45

वृत्ति – धातुं प्रत्ययं प्रत्ययान्तं च वर्जयित्वार्थवच्छब्दस्वरूपं प्रातिपदिकसंज्ञं स्यात्।

अर्थ एवं व्याख्या – अर्थवत्, अधातुः, अप्रत्ययः प्रातिपदिकम् यह सूत्र का पदच्छेद है। इस सूत्र में चार पद हैं। चारों पद प्रथमा एकवचन में हैं। यह प्रातिपदिक संज्ञा करने वाला सूत्र है। 'अर्थः यस्य अस्ति' यह विग्रह करके अर्थ शब्द से तद्धित मतुप् प्रत्यय करने पर 'अर्थवत्' पद बनता है। अर्थवत् इस नपुंसकलिंग शब्द के अनुसार शब्दस्वरूप इस विशेष्य का अध्याहार करना चाहिए। न धातुः, न प्रत्ययः ऐसा विग्रह करके अधातुः, अप्रत्ययः आदि पदों में नञ् तत्पुरुष समास होता है। इस प्रकार अधातु का धातु भिन्न, अप्रत्यय की आवृत्ति करके प्रत्ययभिन्न तथा अर्थवत् पद का अर्थवान् शब्दस्वरूप यह अर्थ होता है। अधातुः अप्रत्ययः ये दोनों अर्थवत् के विशेषण हैं। इस प्रकार धातु, प्रत्यय, प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थवान् स्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है, यह सूत्र का अर्थ है। व्युत्पन्न तथा अव्युत्पन्न भेद से दो पक्ष होते हैं, जिसमें प्रकृति, प्रत्यय की कल्पना हो, वह व्युत्पन्न पक्ष कहलाता है तथा जिसमें प्रकृति, प्रत्यय नहीं है वह अव्युत्पन्न पक्ष कहलाता है, जैसे– राम में रम् धातु तथा घञ् प्रत्यय है, ऐसी कल्पना जब होती है तब राम शब्द व्युत्पन्न कहलाता है। राम शब्द में जब प्रकृति, प्रत्यय नहीं है ऐसा माना जाता है तब राम शब्द अव्युत्पन्न कहलाता है। इस अव्युत्पन्न पक्ष में राम की प्रातिपदिक संज्ञा 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' सूत्र करता है। जब व्युत्पन्न पक्ष होता है तब राम शब्द की यह सूत्र प्रातिपदिक संज्ञा नहीं करेगा क्योंकि तब राम शब्द प्रत्ययान्त हो गया। उस समय राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र करेगा।

उदाहरण– राम, बालक, कृष्ण, हरि, शिशु इत्यादि उक्त सभी शब्द अव्युत्पन्न पक्ष में धातु भिन्न, प्रत्यय भिन्न, प्रत्ययान्त भिन्न तथा अर्थवान् शब्द स्वरूप हैं इसलिए ये सभी पद प्रातिपदिक हैं और इनकी प्रातिपदिक संज्ञा 'अर्थवदधातुरप्रत्यय प्रातिपदिकम्' सूत्र से होगी।

सूत्र – कृत्तद्धितसमासाश्च 1/2/46

वृत्ति – कृत्तद्धितान्तौ समासाश्च तथा स्युः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह भी प्रातिपदिक संज्ञा विधान करने वाला सूत्र है। 'कृत्तद्धितसमासाः' यह प्रथमा विभक्ति का बहुवचन पद है। 'च' यह निपात रूप अव्यय पद है। इस प्रकार इस सूत्र में दो पद हैं। 'अर्थवदधातुरप्रत्यय प्रातिपदिकम्' सूत्र से 'प्रातिपदिकम्' पद की अनुवृत्ति होती है। कृत् और तद्धित के प्रत्यय होने के कारण इससे तदन्त विधि होकर कृदन्त और तद्धितान्त यह अर्थ हो जाता है। इस प्रकार कृदन्त, तद्धितान्त और समास की प्रातिपदिक

संज्ञा होती है। यह सूत्र का अर्थ है। कृदन्त और तद्धितान्त के प्रत्यय होने के कारण पूर्वसूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा प्राप्त नहीं थी इसलिए उनकी प्रातिपदिक संज्ञा यह सूत्र करता है।

कृदन्त के उदाहरण – कर्ता, कारक, पाचक आदि।

तद्धितान्त के उदाहरण – औपगव, वासुदेव, दक्षि आदि।

समास के उदाहरण – राजपुरुष, राजपुत्र इत्यादि।

सूत्र – स्वौ–जसमौट्–छष्टाभ्याम्–भिस्–ङे–भ्याम्–भ्यम्–ङसि–भ्याम्–भ्यस्–ङसोसाम्–ङ्योस्–सुप् 4/1/2

वृत्ति – सु औ जस् इति प्रथमा। अम् औट् शस् इति द्वितीया। टा भ्याम् भिस् इति तृतीया। ङे भ्याम् भ्यस् इति चतुर्थी। ङसि भ्याम् भ्यस् इति पंचमी। ङस् ओस् आम् इति षष्ठी। ङि ओस् सुप् इति सप्तमी।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधि सूत्र है। यह सूत्र समस्त एकपदात्मक है। इस सूत्र में समाहार द्वन्द्व समास है। ङीप्, ङीष्, ङीन् तथा टाप्, डाप्, चाप् आदि जिसके अन्त में हों उससे तथा प्रातिपदिक से पर में स्वादि (सु आदि) प्रत्यय होते हैं। यह सूत्र का अर्थ है। इसका (स्वादि प्रत्ययों का) वर्गीकरण निम्नलिखित रूप से कर सकते हैं :

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पंचमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

इस सूत्र का अर्थ ज्ञात करने हेतु अग्रिम तीनों अधिकार सूत्रों को बताते हैं।

सूत्र – ङ्याप्प्रातिपदिकात् 4/1/1

वृत्ति – 'ङ्याप्प्रातिपदिकात्' इति इतोधिक्रियते।

अर्थ एवं व्याख्या – सम्पूर्ण चौथे एवं पाँचवें अध्याय में इसका अधिकार है। 'ङी' पद से ङीप्, ङीष्, ङीन् का ग्रहण होता है तथा 'आप्' पद से टाप्, डाप्, चाप् का सामान्येन ग्रहण किया जाता है। यह स्त्री प्रत्यय का बोधक है। चौथे अध्याय एवं पाँचवें अध्याय में जो प्रत्यय होंगे वे ङयन्त, आबन्त और प्रातिपदिक से होंगे।

सूत्र – प्रत्ययः 3/1/1

वृत्ति – 'प्रत्ययः' इत्यधिक्रियते।

अर्थ एवं व्याख्या – यह सूत्र भी एकपदात्मक तथा अधिकार सूत्र है। तीसरे, चौथे तथा पाँचवें अध्याय में इसका अधिकार है। इस प्रकार ज्ञात होता है कि तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम अध्याय में प्रत्ययों का विवेचन किया गया है।

सूत्र – परश्च 3/1/2

वृत्ति – 'परश्च' इत्यपि अधिक्रियते।

अर्थ एवं व्याख्या – यह भी एकपदात्मक तथा अधिकार सूत्र है। तीसरे, चौथे एवं पाँचवें अध्याय में इसका अधिकार है। इस प्रकार तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम अध्याय में जो प्रत्यय होंगे वे अपने प्रकृति से पर में बैठेंगे। यह सूत्र का अर्थ है।

सूत्र – सुपः 1/4/103

वृत्ति – सुपस्त्रीणि त्रीणि वचनान्येकशः एकवचनद्विवचनबहुवचनसंज्ञानि स्युः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह सूत्र सुपों (सुप् प्रत्ययों) की एकवचन, द्विवचन, बहुवचन संज्ञा करता है। सुपों के जो तीन–तीन वचन हैं उनकी क्रम से एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन संज्ञा होती है। इसी प्रकार अम् और शस् की द्वितीया के क्रम एकवचन, द्विवचन, बहुवचन संज्ञा होती है। यही सूत्र का अभिप्राय है।

सूत्र – द्वयेकयोर्द्विवचनैकवचने 1/4/22

वृत्ति – द्वित्वैकत्वयोरेते स्तः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह द्विवचन तथा एकवचन का विधान करने वाला विधि सूत्र है। यहाँ द्वि–एकयोः द्विवचन–एकवचने यह पदच्छेद जानना चाहिए। द्वि का द्वित्व तथा एक का एकत्व यह धर्मपरक अर्थ होता है। इस प्रकार द्वित्व की विवक्षा होने पर द्विवचन तथा एकत्व की विवक्षा होने पर एकवचन होता है। यह सूत्रार्थ निष्पन्न हुआ।

सूत्र – विरामोऽवसानम् 1/4/110

वृत्ति – वर्णानामभावोऽवसानसंज्ञः स्यात्। रुत्वविसर्गौ। रामः।

अर्थ एवं व्याख्या – इस सूत्र के द्वारा अवसान संज्ञा की जाती है। विरामः, अवसानम् यह पदच्छेद है। **'विरमणं विरामः'** इस भावपरक व्युत्पत्ति के अनुसार वर्णों के उच्चारण के अभाव को विराम कहते हैं। इस प्रकार वर्णों के अभाव की अवसान संज्ञा होती है, यह सूत्रार्थ किया जाता है, जैसे– 'रामर्' यहाँ पर अन्त्य 'र्' की अवसान संज्ञा होती है। रुत्वविसर्गौ 'रामः' का तात्पर्य है, 'राम स्' ऐसी स्थिति में अन्त्य 'स्' के स्थान में 'रु' आदेश तथा 'उ' की इत्संज्ञा के बाद 'र्' के स्थान में 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से विसर्ग करने के बाद 'रामः' रूप की सिद्धि होती है।

दो राम – व्यक्ति रूप अर्थ का बोध कराने के लिए दो राम शब्द का (राम, राम) प्रयोग प्राप्त होता है। इनमें से एक राम ही शेष रहे। इसी प्रकार तीन राम व्यक्ति रूप अर्थ का बोध

कराने के लिए भी एक राम ही शेष रहे तीन राम शब्द का प्रयोग न हो इसलिए अग्रिम सूत्र बनाया गया है –

सूत्र – सरूपाणमेकशेष एकविभक्तौ 1/2/64

वृत्ति – एकविभक्तौ यानि सरूपाण्येव दृष्टानि तेषामेक एव शिष्यते।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधि सूत्र है। 'सरूपाणाम्', 'एकशेषः', 'एकविभक्तौ' ये तीन पद इस सूत्र में हैं। 'समानं रूपं येषां तेषाम्' इस विग्रह के द्वारा जिनकी (जिन शब्दों की) आनुपूर्वी समान हो, वे सरूप कहलाते हैं। विभक्ति में जिन–जिन शब्दों के रूप समान दिखाई पड़ते हैं, उनमें से एक ही शेष (बचता) रहता है और जो शेष रहता है, वह लुप्तमान अर्थों को भी कहता है। जैसे राम राम औ, राम राम राम जस् यहाँ पर विभक्ति में सभी रामों के रूप समान ही रहते हैं, इसलिए राम औ, राम जस् इन स्थलों में एक ही राम शेष रहता है और वही शिष्ट राम दो राम या तीन राम का बोध कराता है। इस प्रकार प्रथमा द्विवचन में 'राम औ' ऐसी स्थिति एक राम का 'सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ' सूत्र से लोप करने पर बन जाती है। इस प्रकार 'राम औ' ऐसी स्थिति में पूर्वसवर्ण दीर्घ की प्राप्ति होती है। वह सूत्र है–

सूत्र – प्रथमयोः पूर्वसवर्णः 6/1/102

वृत्ति – अकः प्रथमाद्वितीययोरचि पूर्वसवर्णदीर्घ एकादेशः स्यात्। इति प्राप्ते।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। 'प्रथमयोः' यह षष्ठी विभक्ति द्विवचन का रूप है। 'पूर्वसवर्णः' यह प्रथमा का एकवचन है। इस प्रकार इस सूत्र में दो पद हैं। यहाँ पर 'अकः सवर्णे दीर्घः' इस सूत्र से 'अकः' एवं 'दीर्घः' इन दोनों पदों की, 'इकोयणचि' सूत्र से 'अचि' पद की अनुवृत्ति होती है तथा 'एकः पूर्वपरयोः' इसका भी अधिकार आता है। इस प्रकार अक् से (अ इ उ ऋ लृ से) प्रथमा द्वितीया सम्बन्धी अच् पर में होने पर पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश होता है, यह सूत्रार्थ निष्पन्न होता है। इस सूत्र में 'प्रथमयोः' से प्रथमा द्वितीया पद वाच्य का ग्रहण किया जाता है।

उदाहरण– जैसे 'हरि+औ' इस स्थिति में अक् है हरि का इकार, उससे पर में प्रथमा द्वितीया सम्बन्धी अच् है 'औ'। इस प्रकार पूर्व पर 'इ+औ' के स्थान में पूर्व का सवर्ण दीर्घ ई आदेश हो जाता है और हरी रूप बनता है। जिस प्रकार 'हरी' में पूर्वसवर्ण दीर्घ होता है, उसी प्रकार 'राम+औ' यहाँ पर भी पूर्वसवर्ण दीर्घ 'आ' प्राप्त है किन्तु उसका निषेध करने के लिए अग्रिम सूत्र आता है–

सूत्र – नादिचि 6/1/104

वृत्ति – आदिचि न पूर्वसवर्णदीर्घः। वृद्धिरेचि। रामौ।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। न, आत्, अचि – यह पदच्छेद है। इस प्रकार सूत्र में तीन पद हैं। यहाँ 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' इस सूत्र से 'पूर्वसवर्ण' की तथा 'अकः सवर्णे दीर्घः' से 'दीर्घः' पद की अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार अवर्ण से 'इच्' पर में होने पर पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश नहीं होता। इच् यह प्रत्याहार है। इस प्रत्याहार में 'इ, उ, ऋ, लृ, ए, ओ, ऐ, औ' ये

वर्ण आते हैं। इस प्रकार 'राम+औ' ऐसी स्थिति में 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः से प्राप्त पूर्वसवर्ण दीर्घ का 'नादिचि' सूत्र ने निषेध कर दिया। 'वृद्धिरेचि' से वृद्धि कर देने पर 'रामौ' यह रूप बन गया।

सूत्र – बहुषु बहुवचनम् 1/4/21

वृत्ति – बहुत्वविवक्षायां बहुवचनं स्यात्।

अर्थ एवं व्याख्या – इस सूत्र में दो पद हैं। 'बहुषु' यह सप्तमी विभक्ति का बहुवचन है तथा 'बहुवचनम्' यह प्रथमा विभक्ति का एकवचन है। यहाँ बहु शब्द का बहुत्वरूप धर्म अर्थ है। इस प्रकार बहुत्व की विवक्षा होने पर बहुवचन होता है। यह सूत्रार्थ होता है।

इस प्रकार तीन राम व्यक्ति रूप अर्थ का बोध कराने के लिए तीन राम प्रातिपदिक का प्रयोग होता है किन्तु 'सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ' सूत्र से एक राम शब्द शेष रहता है। इस प्रकार बहुत्व की विवक्षा होने पर 'बहुषु बहुवचनम्' सूत्र की सहायता से 'स्वौजस्.' इस सूत्र से प्रथमा विभक्ति के बहुवचन की विवक्षा होने पर 'जस्' प्रत्यय हुआ। इस प्रकार 'राम+जस्' ऐसी स्थिति में 'जस्' की विभक्ति संज्ञा करने के लिए अग्रिम सूत्र आता है 'विभक्तिश्च' तथा जस् के आदि जकार की इत्संज्ञा करने के लिए अग्रिम सूत्र 'चुटू' आता है।

सूत्र – चुटू 1/3/7

वृत्ति – प्रत्ययाद्यौ चुटू इतौ स्तः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह चवर्ग, टवर्ग की इत्संज्ञा करने वाला सूत्र है। 'चुश्च टुश्च इति चुटू'। 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' इस सूत्र से 'इत्' पद की तथा 'षः प्रत्ययस्य' इस सूत्र से 'प्रत्ययस्य' पद की तथा 'आदिर्ञिटुडवः' सूत्र से 'आदि' पद की अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार प्रत्यय के आदि में रहने वाले चवर्ग की इत्संज्ञा होती है। यह सूत्रार्थ निष्पन्न होता है। इस प्रकार इस सूत्र के द्वारा 'जस्' के जकार की इत्संज्ञा होती है तथा 'तस्य लोपः' से जकार का लोप करने पर 'राम+अस्' ऐसी स्थिति बनती है।

'जस्' के सकार की भी 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा प्राप्त होती है, किन्तु 'हलन्त्यम्' सूत्र का निषेध करने हेतु अग्रिम दोनों सूत्र प्रवृत्त होते हैं।

सूत्र – विभक्तिश्च 1/4/104

वृत्ति – सुप्तिङौ विभक्तिसंज्ञौ स्तः।

अर्थ एवं व्याख्या – इस सूत्र में 'सुपः' तथा 'तिङस्त्रीणि त्रीणि प्रथममध्यमोत्तमाः' सूत्र से 'सुपः' तथा 'तिङ्' पद की अनुवृत्ति होती है। इस सूत्र के द्वारा 'सुप्' और 'तिङ्' की विभक्ति संज्ञा की जाती है। इस सूत्र में चकार का ग्रहण इसलिए किया गया है कि पुरुष और वचन संज्ञा के साथ विभक्ति संज्ञा का भी समावेश हो जाए। 'सुप्' और 'तिङ्' की विभक्ति संज्ञा होती है। यह सूत्र का अर्थ है। इस प्रकार सुप् 21 प्रत्ययों की तथा 'तिङ्' 18 प्रत्ययों की यह सूत्र विभक्ति संज्ञा करता है। इस प्रकार 'जस्' की भी विभक्ति संज्ञा इस सूत्र द्वारा की जाती है

और 'जस्' का सकार विभक्तिस्थ सकार कहलाता है। अतः सकार की इत्संज्ञा निषेध के लिए अग्रिम सूत्र आता है।

सूत्र – न विभक्तौ तुस्माः 1/3/4

वृत्ति – विभक्तिस्थास्तवर्गसमा नेतः। इति सस्य नेत्त्वम्। रामाः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह सूत्र इत्संज्ञा का निषेध करता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। विभक्ति में रहने वाले तवर्ग, सकार और मकार की इत्संज्ञा नहीं होती है। 'राम+अस्' इस अवस्था में सकार की इत्संज्ञा का निषेध इस सूत्र द्वारा होता है। इस प्रकार 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' से पूर्वसवर्ण दीर्घ होकर 'रामास्' ऐसी स्थिति में 'ससजुषो रुः' सूत्र से रुत्व एवं 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से विसर्ग करने पर 'रामाः' यह रूप बनता है।

सूत्र – एकवचनं सम्बुद्धिः 2/3/49

वृत्ति – सम्बोधने प्रथमाया एकवचनं सम्बुद्धिसंज्ञं स्यात्।

अर्थ एवं व्याख्या – इस सूत्र में 'प्रातिपदिकार्थलिङ्गपरिमाणवचनमात्रे प्रथमा' सूत्र से 'प्रथमा' पद की तथा 'सम्बोधने च' सूत्र से 'सम्बोधने' पद की अनुवृत्ति होती है। अनुवर्तमान 'प्रथमा' इस पद को षष्ठी विभक्ति में बदलकर 'प्रथमायाः' बना लेते हैं। इस प्रकार सम्बोधन में प्रथमा के एकवचन की सम्बुद्धि संज्ञा होती है। यह सूत्र का अर्थ निष्पन्न होता है। सम्बोधन में प्रथमा एकवचन है 'सु'। इस सूत्र से 'सु' की सम्बुद्धि संज्ञा होती है। 'हे राम+सु' इसमें 'सु' का नाम सम्बुद्धि है तथा 'राम' का नाम अङ्ग है, इसको स्पष्ट करने के लिए अग्रिम प्रवृत्त होता है।

सूत्र – यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् 1/4/13

वृत्ति – यः प्रत्ययो यस्मात् क्रियते तदादिशब्दस्वरूपं तस्मिन्नङ्गं स्यात्।

अर्थ एवं व्याख्या – यह अङ्ग संज्ञा विधायक सूत्र है। 'यस्मात्', 'प्रत्ययविधिः', 'तदादि', 'प्रत्यये', 'अङ्गम्' इस सूत्र में पाँच पद हैं। 'प्रत्ययस्य विधिः (विधानम्) प्रत्ययविधिः' षष्ठी तत्पुरुष समास है। तत् = प्रकृतिरूपम् आदिर्यस्य शब्दस्वरूपस्य तत् तदादि इसमें तद्गुणसंविज्ञानबहुव्रीहि समास है। इस प्रकार जो प्रत्यय जिससे (जिस प्रकृति से) किया जाए उस प्रत्यय के पर में रहते तदादि जो शब्दस्वरूप उसकी अङ्ग संज्ञा होती है। यह सूत्र का अर्थ है, जैसे 'राम सु' यहाँ पर 'राम' शब्द से 'सु' प्रत्यय किया गया। 'सु' प्रत्यय के पर में रहते तदादिशब्दस्वरूप व्यपदेशिकद्भावेन 'राम' हुआ इसलिए 'राम' की अङ्ग संज्ञा होती है। इसी प्रकार 'राम औ', 'राम जस्', 'हे राम सु' इत्यादि स्थलों में भी राम अङ्गसंज्ञक है।

सूत्र – एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः 6/1/69

वृत्ति – एङन्ताद्ध्रस्वान्ताच्चाङ्गाद्धल्लुप्यते सम्बुद्धेश्चेत्।

हे राम। हे रामौ। हे रामाः।

अर्थ एवं व्याख्या – 'एङ्ह्रस्वात्' यह पंचमी विभक्ति एकवचन है। 'सम्बुद्धेः' षष्ठी विभक्ति एकवचन है। इस सूत्र में दो पद हैं। 'हल्ङ्याब्भ्यो दीर्घात्सुतिस्यपृक्तं हल्' सूत्र से 'हल्' पद की तथा 'लोपो व्योर्वलि' सूत्र से 'लोपः' पद की अनुवृत्ति आती है तथा सम्बुद्धि के द्वारा 'अङ्ग' का लोप हो जाता है। इस प्रकार एङन्त ह्रस्वान्त से पर में जो सम्बुद्धि उसके अवयव हल् का लोप होता है। यह सूत्रार्थ है, जैसे–'हे राम स्' इस अवस्था में ह्रस्वान्त अङ्ग है– हे राम। उससे पर में सम्बुद्धि का अवयव हल् है स्, उसका लोप यह सूत्र करता है। इसी प्रकार हे बालक, हे कृष्ण, हे श्याम, हे हरे, हे विष्णो इत्यादि को भी जानना चाहिए। हे रामौ, हे रामाः पूर्ववत् जानना चाहिए।

सूत्र – अमि पूर्वः 6/1/107

वृत्ति – अकोऽम्यचि पूर्वरूपमेकादेशः। रामम्। रामौ।

अर्थ एवं व्याख्या – यह पूर्वरूप करने वाला विधिसूत्र है। 'अमि' सप्तम्यन्त पद है तथा 'पूर्वः' प्रथमान्त पद है। 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से 'अकः' पद की तथा 'इकोयणचि' सूत्र से 'अचि' पद की अनुवृत्ति होती है। 'एकः पूर्वपरयोः' इस सूत्र का अधिकार है। अक् से अम् सम्बन्धी अच् पर में हो तो पूर्व पर के स्थान में पूर्वरूप एकादेश होता है। यह सूत्र का अर्थ है, जैसे– राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने के बाद द्वितीया एकवचन की विवक्षा होने पर 'अम्' विभक्ति होने पर 'राम+अम्' ऐसी स्थिति में 'अमि पूर्वः' सूत्र लगता है। अक् प्रत्याहार में अ इ उ ऋ लृ आता है। इस प्रकार अक् है राम का अन्त्य अ, अम् सम्बन्धी अच् पर में अ है, इस प्रकार पूर्व पर दोनों अकारों के स्थान पर पूर्वरूप अर्थात् पूर्व का रूप अ होने पर 'रामम्' रूप की सिद्धि होती है। राम+अम् = रामम्, हरि+अम् = हरिम्, शिशु+अम् = शिशुम् इत्यादि उदाहरण जानना चाहिए।

सूत्र – लशक्वतद्धिते 1/3/8

वृत्ति – तद्धितवर्जप्रत्ययाद्या लशकवर्गा इतः स्युः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह इत्संज्ञा विधायक सूत्र है। 'लशकु', 'अतद्धिते' यह पदच्छेद है। यह दो पद वाला सूत्र है। न तद्धिते = अतद्धिते, यहाँ नञ् तत्पुरुष समास है। 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से 'इत्' पद की, 'आदिर्ञिटुडवः' सूत्र से आदि पद की, 'षः प्रत्ययस्य' से 'प्रत्ययस्य' पद की अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार तद्धित छोड़कर प्रत्यय के आदि में रहने वाले लकार, शकार और कवर्ग की इत्संज्ञा होती है। यह सूत्र का अर्थ है, जैसे– रामान् = 'राम+शस्' इस स्थिति में 'शस्' के आदि शकार की यह सूत्र इत्संज्ञा करता है तथा 'तस्य लोपः' से शकार का लोप होता है। इस प्रकार राम+अस् इस स्थिति में 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' सूत्र से पूर्वसवर्ण दीर्घ करने के बाद 'रामास्' ऐसी स्थिति में सकार को नकार आदेश करने के लिए अग्रिम सूत्र आता है।

सूत्र – तस्माच्छसो नः पुंसि 6/1/103

वृत्ति – पूर्वसवर्णदीर्घात्परो यः शसः सस्तस्य नः स्यात् पुंसि।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। 'तस्मात्', 'शसः', 'नः', 'पुंसि' ये चार पद इस सूत्र में हैं। 'तस्मात्' पद से यहाँ पर सन्निहित जो पूर्वसवर्ण दीर्घ उसका ग्रहण होता है। 'शसः' इसमें अवयव में षष्ठी विभक्ति हुई है। इस प्रकार कृत पूर्वसवर्णदीर्घ से पर में जो 'शस्' का अवयव सकार है, पुँल्लिङ्ग में उसके स्थान पर नकार आदेश होता है। यह सूत्र का अर्थ है। 'रामास्' इस स्थिति में सकार को नकार आदेश इस सूत्र से होता है। इस प्रकार 'रामान्' पद की सिद्धि होती है।

सूत्र – अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि 8/4/2

वृत्ति – अट् कवर्गः पर्वग आङ् नुम् एतैव्यवस्तैर्यथासम्भवं मिलितैश्च व्यवधानेऽपि रषाभ्यां परस्य नस्य णः समानपदे। इति प्राप्ते।

अर्थ एवं व्याख्या – यह णकार का विधान करने वाला सूत्र है। 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवाये', 'अपि' ये दो पद इस सूत्र में हैं। 'रषाभ्यां नो णः समानपदे' यह पूर्वसूत्र इस सूत्र में अनुवृत्त होता है। पूर्व सूत्र में रेफ और षकार से अव्यवहित (व्यवधानरहित) नकार को णकार का विधान किया गया है। अब अदादि के व्यवधान में णकार करने के लिए इस सूत्र का आरम्भ किया गया है। अट् प्रत्याहार है। इसमें अ इ उ ऋ लृ ए ओ ऐ औ ह् य् र् व् ये वर्ण आते हैं। कु = कवर्ग = क् ख् ग् घ् ङ्। पु = पवर्ग = प् फ् ब् भ् म्। आङ् = अ। नुम् = न् = अनुस्वार। इन सभी वर्णों का व्यवधान होने पर भी रेफ, षकार से पर में जो नकार उसको णकार आदेश होता है। इस सूत्र से रामान् में णत्व प्राप्त होता है। उसका निषेध अग्रिम सूत्र से होता है।

सूत्र – पदान्तस्य 8/4/37

वृत्ति – नस्य णो न! रामान।

अर्थ एवं व्याख्या – यह णत्व का निषेधक सूत्र है। इस सूत्र में एक पद है। 'न भाभूपूकमिगमिप्यायीवेपाम्' सूत्र से 'न' की अनुवृत्ति होती है। 'रषाभ्यां नो णः समानपदे' तथा 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' यह दोनों सूत्र अनुवृत्त होते हैं। इस प्रकार अट्, कवर्ग, पवर्ग, आङ्, नुम् इनके व्यवधान में (एक के अथवा मिलित के) भी रेफ षकार से पर में पदान्त नकार के स्थान में णकार नहीं होता है। 'रामान्' पद की 'सुप्तिङन्तं पदम्' सूत्र से पद संज्ञा होती है। पदान्त में नकार है इसलिए इस सूत्र के द्वारा णत्व का निषेध हो जाता है। इस प्रकार 'रामान्' पद की सिद्धि होती है।

सूत्र – टाङसिङसामिनात्स्याः 7/1/12

वृत्ति – अदन्ताट्टादीनामिनादयः स्युः। णत्वम्। रामेण।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। 'टाङसिङसाम्', 'इनात्स्याः' ये सूत्र का पदच्छेद है। 'अङ्गस्य' (6/4/1) का अधिकार इस सूत्र में आता है। 'अतो भिस् ऐस्' इस सूत्र से 'अतः' यह पञ्चम्यन्त पद अनुवृत्त होता है। अतः इस पञ्चम्यन्त पद के अनुरोध से 'अङ्गस्य' यह 'अङ्गात्' पञ्चम्यन्त हो जाता है तथा इसका विशेषण जो 'अतः' है उसे 'येनविधिस्तदन्तस्य'

इस सूत्र से तदन्त विधि होती है। इस प्रकार अदन्त अङ्ग से पर में 'टादियों' को 'इनादि' आदेश होते हैं। टादि = टा, ङसि, ङस्। इनादि = इन, आत्, स्य, क्योंकि तीन स्थायी हैं और तीन आदेश हैं इसलिए क्रम से टा के स्थान पर इन, ङसि के स्थान पर आत्, ङस् के स्थान पर स्य आदेश यथासंख्य सूत्र के अनुसार होते हैं।

सूत्र – सुपि च 7/3/102

वृत्ति – यञादौ सुपि अतोऽङ्गस्य दीर्घः। रामाभ्याम्।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में 'अङ्गस्य' (6/4/1) का अधिकार है। 'अतो भिस् ऐस्' से 'अतः' पद की 'अतो दीर्घो यञि' से 'यञि' पद की अनुवृत्ति होती है। 'अङ्गस्य' विभक्ति विपरिणाम के द्वारा 'अङ्गात्' बन जाता है। 'अतः' इस विशेषण से तदन्त विधि होकर तथा 'यञि' 'सुपि' का विशेषण होता है। विशेषण 'यञि्' पद से 'यस्मिन् विधिस्तदादावल्ग्रहणे' इस नियम से तदादि विधि होकर अदन्त अङ्ग को दीर्घ होता है यञादि 'सुप्' पर में होने पर। यह सूत्र का अर्थ है। तृतीया द्विवचन की विवक्षा में 'राम+भ्याम्' इस स्थिति में 'यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' सूत्र से राम की अङ्ग संज्ञा होने पर 'राम' अदन्त अङ्ग कहलाता है। अदन्त अङ्ग होने के कारण 'सुपि च' सूत्र से (अलोऽन्त्यस्य सूत्र की सहायता से) राम के अकार को दीर्घ कर 'रामाभ्याम्' रूप बनता है।

सूत्र – अतो भिस् ऐस् 7/1/9

वृत्ति – अनेकाल्शित्सर्वस्य। रामैः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में भी 'अङ्गस्य' (6/4/1) का अधिकार है। अतः यह विशेषण है, इसलिए तदन्त विधि होकर के अकारान्त अङ्ग से पर में जो 'भिस्' है उसको 'ऐस्' आदेश होता है। यह आदेश अनेकाल् होने से 'अनेकाल्शित्सर्वस्य' इस सूत्र से सम्पूर्ण 'भिस्' के स्थान में होता है, जैसे–तृतीया बहुवचन में 'राम+भिस्' इस अवस्था में 'अनेकाल्शित्सर्वस्य' सूत्र की सहायता से 'अतो भिस् ऐस्' इस सूत्र से भिस् के स्थान में 'ऐस्' होता है। राम+ऐस् होने पर वृद्धि और रुत्व विसर्ग होकर 'रामैः' रूप बनता है।

सूत्र – ङेर्यः 7/1/13

वृत्ति – आतोऽङ्गात्परस्य ङेर्यादेशः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में 'ङेः' यह षष्ठी विभक्ति का एकवचन है। 'यः' प्रत्यय है। 'अतो भिस् ऐस्' सूत्र से 'अतः' की अनुवृत्ति होती है। 'अङ्गस्य' यह अधिकृत पद 'अतः' इस पञ्चम्यन्त पद के अनुरोध से यह पञ्चम्यन्त हो जाता है। 'अतः' इस विशेषण पद से 'येनविधि.' सूत्र से तदन्त विधि होती है। इस प्रकार अदन्त अङ्ग से पर में जो 'ङे' है उसको 'य्' आदेश होता है। यह सूत्रार्थ है, जैसे– राम+ङे = राम+ए इस

स्थिति में 'ङेर्यः' सूत्र से राम+य रूप बनता है और 'स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ' सूत्र से 'ङे' में रहने वाले सुप्त्व धर्म का यकार में अतिदेश होकर 'य' सुप् कहलाता है और 'सुपि च' से दीर्घ होकर 'रामाय' रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ 1/1/56

वृत्ति – आदेशः स्थानिवत्स्यान्नतु स्थान्यलाश्रयविधौ। इति स्थानिवत्त्वात् सुपि चेति दीर्घः। रामाय। रामाभ्याम्।

अर्थ एवं व्याख्या – यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र में 'स्थानिवत्', 'आदेशः', 'अनल्विधौ' यह तीन पद हैं। 'स्थानिना तुल्यम्' ऐसा विग्रह करके 'स्थानिवत्' पद का अर्थ होता है– 'स्थानिवृत्ति धर्मवान्'। इसमें 'स्थानिवदादेशः' यह विधि अंश हैं तथा 'अनल्विधौ' यह निषेधांश है। 'स्थानिवदादेशः' इस विध्यंश का अर्थ होता है कि आदेश स्थानी में रहने वाला धर्मवाला होता है। 'अनल्विधौ' इस निषेधांश का अर्थ होता है कि स्थानी का अवयव जो अल् उसमें रहने का धर्म वह धर्म आदेश में नहीं आता है, जैसे अचत्व, इकारत्व, उकारत्व, एकारत्व आदि जो अल् वृत्ति धर्म वह आदेश में नहीं आते तथा सुप्त्व, धातुत्व, अङ्गत्व, प्रत्ययत्व, आदि अनल्वृत्ति धर्म आदि आदेश में इस सूत्र में आ जाते हैं। इस प्रकार राम+य इस स्थिति में 'ङे' में रहने वाले सुप्त्व धर्म का यकार में अतिदेश यह सूत्र कर देता है जिसके कारण 'य' सुप् कहलाता है तथा 'सुपि च' सूत्र से दीर्घ होकर 'रामाय' रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – बहुवचने झल्येत् 7/3/103

वृत्ति – झलादौ बहुवचने सुप्यतोऽङ्गस्यैकारः। रामेभ्यः। सुपि किम्? पचध्वम्।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। 'अतो भिस् ऐस्' सूत्र से 'अतः' पद की अनुवृत्ति होती है। 'अङ्गस्य' का अधिकार है। उसका 'अतः' यह विशेषण है, इसलिए 'अतः' से तदन्त विधि होती है। 'सुपि च' से 'सुपि' पद की अनुवृत्ति होती है। उसका 'झलि' विशेषण है। 'यस्मिन्विधिस्तदादावल्ग्रहणे' से तदादि विधि होकर झलादि बहुवचन सुप् पर में होने पर अदन्त अङ्ग को एकार आदेश होता है। 'अलोऽन्त्यस्य' इस परिभाषा सूत्र से अन्त्य ह्रस्व अकार के स्थान में यह एकार आदेश होता है, जैसे– राम+भ्यस् इस स्थिति में 'भ्यस्' झलादि बहुवचन है, उसके परे रहते राम के अकार के स्थान में एकार आदेश प्रकृत सूत्र से होता है। सकार के स्थान पर रुत्व विसर्ग करने पर 'रामेभ्यः' पद बनता है।

सुपि किम्? पचध्वम्। यहाँ पर यह शंका होती है कि इस सूत्र में 'सुपि' की अनुवृत्ति की क्या आवश्यकता है? इसका उत्तर है कि 'पचध्वम्' में एकार आदेश न हो जाए, इसलिए इस सूत्र में 'सुपि' की अनुवृत्ति होती है क्योंकि 'पचध्वम्' में 'ध्वम्' 'तिङ्' है 'सुप्' नहीं है, इसलिए यहाँ एकार आदेश नहीं होता।

सूत्र – वाऽवसाने 8/4/56

वृत्ति – अवसाने झलां चरो वा। रामात्, रामाद्। रामाभ्याम्। रामेभ्यः। रामस्य।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में 'झलां जश् झसि' सूत्र से 'झलां' पद की तथा 'अभ्यासे चर्चः' सूत्र से 'चर्' पद की अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार अवसान में जो 'झल्' है उसके स्थान पर 'चर्' आदेश होता है। यह सूत्र का अर्थ है; जैसे राम+ङसि इस स्थिति में 'टाङसिङसामिनात्स्याः' सूत्र से 'ङस्' के स्थान पर 'आत्' आदेश होकर राम+आत् रूप

बनता है। 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होकर 'रामात्' इस अवस्था में 'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से तकार के स्थान में दकार आदेश होने के बाद 'वाऽवसाने' सूत्र से दकार के स्थान में तकार आदेश करने पर 'रामात्' रूप बनता है जब तकार आदेश नहीं हुआ तब दकार ही रहने पर 'रामाद्' रूप बनता है।

सूत्र – ओसि च

वृत्ति – अतोऽङ्गस्यैकारः। रामयोः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधि सूत्र है। 'अतो भिस् ऐस्' इस सूत्र से 'अतः' पद की अनुवृत्ति है। 'बहुवचने झल्येत्' से 'एत्' पद की अनुवृत्ति है। 'अङ्गस्य' का इस सूत्र में अधिकार है। 'अङ्गस्य' का विशेषण 'अतः' है तथा 'अतः' इस पद से तदन्त विधि होकर अदन्त अङ्ग को एकादेश होता है ओस् पर में होने पर, जैसे– राम+ओस् इस स्थिति में 'ओसि च' सूत्र से राम के अकार के स्थान पर एकार आदेश होने पर रामे+ओस् रूप बनता है। 'एचोऽयवायावः' सूत्र से 'अय्' आदेश होकर और सकार को रुत्त्व विसर्ग होकर 'रामयोः' रूप बनता है।

सूत्र – ह्रस्वनद्यापो नुट् 7/1/54

वृत्ति – ह्रस्वान्तन्नद्यन्तादाबन्ताच्चाङ्गात्परस्यामो नुडागमः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह नुट् का आगम करने वाला सूत्र है। इस सूत्र में 'ह्रस्वनद्यापः' पञ्चम्यन्त तथा 'नुट्' प्रथमान्त पद है। 'आमिसर्वनाम्नः सुट्' सूत्र से 'आमि' पद की अनुवृत्ति होती है तथा वह षष्ठी विभक्ति में बदलकर 'आमः' बन जाता है। 'अङ्गस्य' का इस सूत्र में अधिकार है, वह भी पञ्चमी विभक्ति में बदल जाता है। उसका 'ह्रस्वनद्यापः' यह विशेषण है और 'येनविधिस्तदन्तस्य' से तदन्तविधि होती है। इस प्रकार ह्रस्वान्त, नद्यन्त, आबन्त अङ्ग से पर में 'आम्' को 'नुट्' आगम होता है। यह सूत्र का अर्थ है। 'नुट्' में उकार और टकार की इत्संज्ञा होकर लोप होता है, नकार शेष रहता है और यह 'नुट्' आगम 'आद्यन्तौ टकितौ' से 'आम्' के पूर्व में होता है, जैसे– राम+आम् इस स्थिति में 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' से नुटागम होने पर 'आद्यन्तौ टकितौ' सूत्र से नकार 'आम्' का आदि अवयव होता है। इस प्रकार राम+नाम् इस स्थिति में राम के अकार को दीर्घ करने वाला अग्रिम सूत्र आता है।

सूत्र – नामि 6/4/3

वृत्ति – अजन्ताङ्गस्य दीर्घः। रामाणाम्। रामे। रामयोः। सुपि एत्वे कृते।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। नामि यह एक पद वाला सूत्र है। यहाँ 'ह्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः' सूत्र में 'दीर्घ' पद की अनुवृत्ति होती है। दीर्घ श्रुति से 'अचश्च' इस परिभाषा सूत्र से 'अचः' की उपस्थिति होती है। उस 'अच्' के द्वारा अङ्ग को विशेषित किया जाता है। इस कारण विशेषणीभूत 'अच्' पद से तदन्त विधि होती है। इस प्रकार अजन्त अङ्ग को दीर्घ होता है नाम परे रहते। यह सूत्र का अर्थ है, जैसे–'राम+नाम्' इस स्थिति में 'नामि' सूत्र से राम के अकार को दीर्घ होता है। 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से न् को णकार करने पर 'रामाणाम्' रूप बनता है।

सूत्र – आदेशप्रत्यययोः 8/3/59

वृत्ति : इण्कुभ्यां परस्यापदान्तस्यादेशस्य प्रत्ययावयवश्च यः सस्तस्य मूर्धन्यादेशः। ईषद्विवृतस्य सस्य तादृश एव षः। रामेषु। एवं कृष्णादयोऽप्यदन्ताः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधि सूत्र है। 'आदेशप्रत्यययोः' यह समस्त एकपदात्मक सूत्र है। 'आदेशश्च प्रत्ययश्च इति आदेशप्रत्ययौ तयोः आदेशप्रत्ययोः' ऐसा विग्रह करके इतरेतर द्वन्द्व समास है। एकैव षष्ठी विषयभेद्. इस नियम से आदेश की अभेदषष्ठी है तथा प्रत्यय की अवयवषष्ठी है। 'अपदान्तस्य मूर्धन्यः' (8/3/55), 'इण्कोः' (8/3/57) इन दोनों सूत्रों का अधिकार है। 'सहे साडः सः' (8/3/58) इस सूत्र से 'सः' इस षष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार इण् कवर्ग से पर में अपदान्त आदेश रूप सकार अथवा प्रत्यय का अवयव सकार के स्थान में मूर्धन्य आदेश होता है, जैसे– रामे+सु में 'आदेशप्रत्यययोः' सूत्र से इण् के पर में सु प्रत्यय के अवयव सकार के स्थान में मूर्धन्य षकार होकर 'रामेषु' रूप बनता है।

1.3 राम शब्द की रूपसिद्धि की प्रकिया

1) रामः – राम शब्द की अव्युत्पन्न पक्ष में 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' सूत्र के द्वारा अथवा व्युत्पन्न पक्ष में 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र के द्वारा प्रातिपदिक संज्ञा होकर, प्रातिपदिक संज्ञा के कारण 'ङयाप्प्रातिपदिकात्', 'प्रत्ययः', 'परश्च', 'सुपः', 'द्वयेकयोद्विवचनैकवचने' इन सूत्रों की सहायता से 'स्वौ-जसमौट-छष्टाभ्याम्-भिस्-ङे-भ्याम्-भ्यस्-ङसि-भ्याम्-भ्यस्-ङसोसाम्-ङियोस्-सुप्' सूत्र से प्रथमा एकवचन की विवक्षा होने के कारण राम प्रातिपदिक से 'सु' प्रत्यय किया = राम+सु। 'राम+सु' इस स्थिति में 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से उकार की इत्संज्ञा हुई। 'राम+स्' इस स्थिति में 'ससजुषो रुः' सूत्र से सकार के स्थान पर 'रु' आदेश हुआ। 'रु' के उकार की इत्संज्ञा होकर 'राम+र्' रूप बना। ऐसी स्थिति में रकार की 'विरामोऽवसानम्' से अवसान संज्ञा हुई तथा 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से सकार के स्थान पर विसर्ग आदेश होकर 'रामः' रूप की सिद्धि हुई।

2) रामौ – राम पद की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर प्रथमा विभक्ति के द्विवचन की विवक्षा में 'औ' विभक्ति हुई। 'सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ' सूत्र से एक राम शब्द का लोप करने पर एक राम शब्द शेष रहता है तथा दो राम अर्थ का बोध कराता है। 'राम+औ' इस स्थिति में 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' से पूर्वसवर्ण एकादेश प्राप्त होता है किन्तु 'नादिचि' सूत्र से उसका निषेध होकर 'वृद्धिरेचि' से वृद्धि करने पर 'रामौ' पद सिद्ध होता है।

3) रामाः – राम शब्द की अव्युत्पन्न पक्ष में 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' सूत्र के द्वारा अथवा व्युत्पन्न पक्ष में 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र के द्वारा प्रातिपदिक संज्ञा होकर, प्रातिपदिक संज्ञा के कारण 'ङयाप्प्रातिपदिकात्', 'प्रत्ययः', 'परश्च', 'सुपः', इन सूत्रों की सहायता से 'स्वौ-जसमौट-छष्टाभ्याम्-भिस्-ङे-भ्याम्-भ्यस्-ङसि-भ्याम्-भ्यस्-ङसोसाम्-ङियोस्-सुप्' सूत्र से प्रथमा बहुवचन की विवक्षा होने के कारण राम प्रातिपदिक से 'जस्' प्रत्यय किया = 'राम+जस्।' 'जस्' प्रत्यय के आद्य अवयव 'ज्' की 'चुटू' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से लोप करने पर 'राम+अस्' रूप बना। 'राम+अस्' इस अवस्था में सकार की 'हलन्त्यम्' सूत्र से प्राप्त इत्संज्ञा का 'न विभक्तौ तुस्माः' सूत्र से निषेध हो जाता है। 'राम+अस्' इस अवस्था में प्राप्त 'अतो गुणे' का परत्वात् 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' से बाध होकर पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश होकर 'रामास्' रूप बना। 'रामास्' इस स्थिति में 'ससजुषो रुः' सूत्र से सकार के स्थान पर 'रु' आदेश हुआ। 'रु' के उकार की इत्संज्ञा होकर 'रामा+र्' रूप बना। ऐसी स्थिति में रकार की 'विरामोऽवसानम्' से अवसान संज्ञा हुई तथा 'खरवसानयोर्विसर्जनीयः' सूत्र से सकार के स्थान पर विसर्ग आदेश होकर 'रामाः' रूप की सिद्धि हुई।

4) हे राम! – राम शब्द की अव्युत्पन्न पक्ष में 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' सूत्र के द्वारा अथवा व्युत्पन्न पक्ष में 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र के द्वारा प्रातिपदिक संज्ञा होकर, प्रातिपदिक संज्ञा के कारण 'ङयाप्प्रातिपदिकात्', 'प्रत्ययः', 'परश्च', 'सुपः', 'द्वयेकयोद्विवचनैकवचने' इन सूत्रों की सहायता से 'स्वौ-जसमौट-छष्टाभ्याम्-भिस्-ङे-भ्याम्-भ्यस्-ङसि-भ्याम्-भ्यस्-ङसोसाम्-ङियोस्-सुप्' सूत्र से सम्बोधन में प्रथमा एकवचन की विवक्षा होने के कारण राम प्रातिपदिक से 'सु' प्रत्यय किया = राम+सु। सु की एकवचनं सम्बुद्धि सूत्र से सम्बुद्धि संज्ञा हुई। 'सु' प्रत्यय के अवयव उकार की 'उपदेशेऽजनुनासिक इत्' सूत्र से इत्संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से लोप हो जायेगा। 'राम+स्' इस अवस्था में 'स्' के परे रहते पूर्व में विद्यमान 'राम' इस शब्द स्वरूप की 'यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' सूत्र से राम की अंग संज्ञा होती है। राम इस अंग के अन्त में एकमात्रिक 'अ' वर्ण है जो कि ह्रस्व संज्ञक है, अतः ह्रस्व वर्ण अन्त में विद्यमान होने से 'राम' ह्रस्वान्त अंग हो गया। 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' सूत्र से ह्रस्वान्त अंग से परे विद्यमान सम्बुद्धि के अवयव हल् का लोप हो जाता है। अतः राम रूप ह्रस्वान्त अंग से परे सम्बुद्धि के अवयव 'स्' का लोप होकर 'हे राम!' रूप की सिद्धि होती है।

5) हे रामौ! – राम शब्द की प्रातिपादिक संज्ञा करके सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'औ' विभक्ति होने पर 'राम+औ' इस अवस्था में प्राप्त 'वृद्धिरेचि' से वृद्धि के परत्वात् 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' सूत्र बलवान् होने से पूर्वसवर्ण दीर्घ प्राप्त होता है। प्राप्त पूर्वसवर्ण दीर्घ का भी निषेध 'नादिचि' सूत्र से हो जाने से पुनः 'वृद्धिरेचि' से वृद्धि करके 'हे रामौ!' रूप की सिद्धि होती है।

6) हे रामाः! – राम पद की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति के बहुवचन की विवक्षा में 'राम' प्रातिपदिक से 'जस्' प्रत्यय होकर 'राम+जस्' इस अवस्था में 'जस्' प्रत्यय के आद्य अवयव जकार की 'चुटू' सूत्र से इत्संज्ञा एवं 'तस्य लोपः' से लोप करने पर 'राम+अस्' रूप बनता है। 'राम+अस्' इस अवस्था में सकार की 'हलन्त्यम्' सूत्र से प्राप्त इत्संज्ञा का 'न विभक्तौ तुस्माः' सूत्र से निषेध हो जाता है। 'राम+अस्' इस अवस्था में प्राप्त 'अतो गुणे' का परत्वात् 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' से बाध होकर पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश हो जाता है। 'रामास्' इस अवस्था में स्वादिकार्य करके 'हे रामाः!' रूप की सिद्धि होती है।

7) रामम् – राम शब्द की प्रातिपादिक संज्ञा होने के पश्चात् द्वितीया विभक्ति एकवचन की विवक्षा में 'अम्' विभक्ति होने पर 'राम+अम्' ऐसी स्थिति में 'अमि पूर्वः' सूत्र लगता है। 'अक्' प्रत्याहार में अ, इ, उ, ऋ, ऌ वर्ण आते हैं। इस प्रकार राम पद का अन्त्य अकार अक् है, अम् सम्बन्धी अच् पर में है अ। अतः पूर्व और पर दोनों अकारों के स्थान पर पूर्वरूप अर्थात् पूर्व का रूप 'अ' होने पर 'रामम्' रूप की सिद्धि होती है।

8) रामौ – राम शब्द की प्रातिपादिक संज्ञा होने के पश्चात् द्वितीया विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'औट्' विभक्ति होने पर 'राम+औट्' रूप बनता है। टकार की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से लोप होकर 'राम+औ' इस स्थिति में 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' का 'नादिचि' सूत्र से निषेध करने पर तथा 'वृद्धिरेचि' से वृद्धि करने पर 'रामौ' रूप की सिद्धि होती है।

9) रामान् – राम शब्द की प्रातिपादिक संज्ञा होने के पश्चात् द्वितीया विभक्ति बहुचन की विवक्षा में 'शस्' विभक्ति होने पर 'राम+शस्' रूप बनता है। 'शस्' प्रत्यय के अवयव 'श्' की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से लोप करने पर 'राम+अस्' रूप बना। 'राम+अस्' इस अवस्था में सकार की 'हलन्त्यम्' सूत्र से प्राप्त इत्संज्ञा का 'न विभक्तौ तुस्माः' सूत्र से निषेध हो जाता है। 'राम+अस्' इस अवस्था में 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश होकर 'रामास्' इस अवस्था में 'तस्माच्छसोः नः पुंसि' सूत्र से 'शस्' प्रत्यय के अवयव

सकार के स्थान पर नकार आदेश होता है। 'रामान्' इस अवस्था में रेफ और नकार के बीच में 'अट्-पवर्ग' का व्यवधान होने से 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से प्राप्त णत्व विधि का 'न पदान्तस्य' सूत्र से निषेध हो जाने पर 'रामान्' पद की सिद्धि होती है।

10) रामेण – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर तृतीया एकवचन की विवक्षा में 'टा' प्रत्यय होता है। 'टा' प्रत्यय के टकार की 'चुटू' सूत्र से इत्संज्ञा होकर 'तस्य लोपः' से लोप होकर 'राम+आ' इस अवस्था में 'यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' सूत्र से राम की अंग संज्ञा होती है। अंग संज्ञा होने के कारण 'राम' पद अदन्त अंग कहलाता है। इस प्रकार 'टाङसिङसामिनात्स्याः' सूत्र से टा के स्थान पर 'इन' आदेश करने के बाद 'राम+इन' इस अवस्था में 'आद्गुणः' सूत्र से गुण होकर 'रामेन' इस स्थिति में 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से नकार के स्थान पर णकार करके 'रामेण' पद की सिद्धि होती है।

11) रामाभ्याम् – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर तृतीया विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'भ्याम्' प्रत्यय लगाने पर 'राम+भ्याम्' रूप बनता है। 'राम+भ्याम्' इस स्थिति में 'यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' सूत्र से राम की अंग संज्ञा होकर 'राम' अदन्त अंग हुआ। अदन्त अंग होने के कारण 'सुपि च' इस सूत्र से (अलोऽन्त्यस्य सूत्र की सहायता से) राम के अकार को दीर्घ कर 'रामाभ्याम्' पद की सिद्धि होती है।

12) रामैः – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर तृतीया विभक्ति बहुवचन की विवक्षा में भिस् प्रत्यय लगाने पर 'राम+भिस्' रूप बनता है। 'राम+भिस्' इस अवस्था में 'अनेकालशित्सर्वस्य' सूत्र की सहायता से 'अतो भिस् ऐस्' सूत्र से भिस् के स्थान में 'ऐस्' होकर 'राम+ऐस्' रूप बना। 'राम+ऐस्' इस अवस्था में 'वृद्धिरेचि' सूत्र से वृद्धि होकर सकार को रुत्व विसर्ग होने पर 'रामैः' पद की सिद्धि होती है।

13) रामाय – राम शब्द की प्रातिपादिक संज्ञा होने के पश्चात् चतुर्थी विभक्ति एकवचन की विवक्षा में 'ङे' विभक्ति होने पर 'राम+ङे' रूप बनता है। 'ङे' प्रत्यय के अवयव 'ङ' की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा करके 'तस्य लोपः' से लोप करने पर 'राम+ए' इस स्थिति में 'ङेर्यः' सूत्र से एकार के स्थान पर 'य' आदेश करने पर 'राम+य' इस स्थिति में 'सुपि च' सूत्र से राम पद के मकारोत्तरवर्ती अकार को दीर्घ करके 'रामाय' पद की सिद्धि होती है।

14) रामाभ्याम् – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर चतुर्थी विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'भ्याम्' प्रत्यय लगाने पर 'राम+भ्याम्' रूप बनता है। 'राम+भ्याम्' इस स्थिति में

'यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' सूत्र से राम की अंग संज्ञा होकर 'राम' अदन्त अंग हुआ। अदन्त अंग होने के कारण 'सुपि च' इस सूत्र से (अलोऽन्त्यस्य सूत्र की सहायता से) राम के अकार को दीर्घ कर 'रामाभ्याम्' पद की सिद्धि होती है।

15) रामेभ्यः – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने के बाद चतुर्थी विभक्ति बहुवचन की विवक्षा में 'भ्यस्' प्रत्यय होने पर 'राम+भ्यस्' की स्थिति बनती है। 'राम+भ्यस्' इस स्थिति में 'यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' सूत्र से राम शब्द की अंग संज्ञा हुई और राम शब्द अदन्त अंग बन जाता है। 'भ्यस्' झलादि बहुवचन है उससे परे रहते राम के अकार के स्थान पर एकार आदेश 'बहुवचने झल्येत्' सूत्र के द्वारा होता है। सकार के स्थान पर रुत्व विसर्ग करने पर 'रामेभ्यः' रूप सिद्ध होता है।

16) रामात्, रामाद् – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर पंचमी एकवचन की विवक्षा में 'ङसि' प्रत्यय होकर 'राम+ङसि' रूप बनता है। यहाँ ङसि का इकार उच्चारणार्थक है तथा ङकार की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से लोप होकर 'राम+अस्' रूप बनता है। 'राम+अस्' इस स्थिति में 'टाङसिङसामिनात्स्याः' सूत्र से ङस् के स्थान पर आत् आदेश होने से 'राम+आत्' इस स्थिति में 'अकः सवर्णे दीर्घः' सूत्र से दीर्घ होने से 'रामात्' इस अवस्था में 'झलां जशोऽन्ते' सूत्र से तकार के स्थान पर 'दकार' आदेश होने से 'रामाद्' रूप भी बनता है। 'वाऽवसाने' सूत्र से दकार के स्थान पर तकार आदेश करने पर 'रामात्' रूप सिद्ध होता है। जब तकार आदेश नहीं होगा तब दकार आदेश होकर 'रामाद्' रूप भी बनेगा।

17) रामाभ्याम् – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर पंचमी विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'भ्याम्' प्रत्यय लगाने पर 'राम+भ्याम्' रूप बनता है। 'राम+भ्याम्' इस स्थिति में 'यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' सूत्र से राम की अंग संज्ञा होकर 'राम' अदन्त अंग हुआ। अदन्त अंग होने के कारण 'सुपि च' इस सूत्र से (अलोऽन्त्यस्य सूत्र की सहायता से) राम के अकार को दीर्घ कर 'रामाभ्याम्' पद की सिद्धि होती है।

18) रामेभ्यः – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने के बाद पंचमी विभक्ति बहुवचन की विवक्षा में 'भ्यस्' प्रत्यय होने पर 'राम+भ्यस्' की स्थिति बनती है। 'राम+भ्यस्' इस स्थिति में 'यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' सूत्र से राम शब्द की अंग संज्ञा हुई और राम शब्द अदन्त अंग बन जाता है। 'भ्यस्' झलादि बहुवचन है उससे परे रहते राम के अकार के स्थान

पर एकार आदेश 'बहुवचने झल्येत्' सूत्र के द्वारा होता है। सकार के स्थान पर रुत्व विसर्ग करने पर 'रामेभ्यः' रूप सिद्ध होता है।

19) रामस्य – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर षष्ठी विभक्ति एकवचन की विवक्षा में 'ङस्' प्रत्यय का विधान होने पर 'राम+ङस्' रूप बनता है। इस प्रत्यय के ङकार की 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' सूत्र से लोप करने पर राम+अस् रूप बनता है। 'टाङसिङसामिनात्स्याः' सूत्र से 'ङस्' के स्थान पर 'स्य' आदेश करने पर 'रामस्य रूप की सिद्धि होती है।

20) रामयोः – राम शब्द की प्रातिपादिक संज्ञा होने पर षष्ठी द्विवचन की विवक्षा में 'ओस्' प्रत्यय होने पर 'राम+ओस्' इस स्थिति में 'ओसि च' सूत्र से राम के अकार के स्थान पर एकारादेश होने पर 'रामे+ओस्' इस स्थिति में 'एचोऽयवायावः' सूत्र से एकार के स्थान पर 'अय्' आदेश तथा वर्णसम्मेलन करने पर 'रामयोस्' इस अवस्था में सकार के स्थान पर रुत्व विसर्ग करने पर 'रामयोः' पद की सिद्धि होती है।

21) रामाणाम् – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर षष्ठी बहुवचन की विवक्षा में 'आम्' प्रत्यय होकर 'राम+आम्' रूप बना। 'राम+आम्' इस स्थिति में 'यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' सूत्र से राम शब्द की अंग संज्ञा हुई और राम शब्द अदन्त अंग बना। 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' सूत्र से नुटागम (न्) होने पर 'आद्यन्तौ टकितौ' सूत्र की सहायता से आम् का आदि अवयव होता है। 'राम+नाम्' इस स्थिति में 'नामि' सूत्र से राम के अकार को दीर्घ होकर तथा 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से नकार को णकार करने पर 'रामाणाम्' रूप सिद्ध हुआ।

22) रामे – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर सप्तमी विभक्ति एकवचन की विवक्षा में ङि प्रत्यय करने पर 'राम+ङि' रूप बना। 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से ङकार की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से लोप होने पर 'राम+इ' रूप बना। 'राम+इ' इस स्थिति में 'आद्गुणः' से गुण करने पर 'रामे' रूप की सिद्धि होती है।

23) रामयोः – राम शब्द की प्रातिपादिक संज्ञा होने पर सप्तमी द्विवचन की विवक्षा में 'ओस्' प्रत्यय होने पर 'राम+ओस्' इस स्थिति में 'ओसि च' सूत्र से राम के अकार के स्थान पर एकारादेश होने पर 'रामे+ओस्' इस स्थिति में 'एचोऽयवायावः' सूत्र से एकार के स्थान पर 'अय्' आदेश तथा वर्णसम्मेलन करने पर 'रामयोस्' इस अवस्था में सकार के स्थान पर रुत्व विसर्ग करने पर 'रामयोः' पद की सिद्धि होती है।

24) रामेषु – राम शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर सप्तमी विभक्ति बहुवचन की विवक्षा में सुप् प्रत्यय होकर 'राम+सुप्' रूप बना। पकार की 'हलन्त्यम्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से लोप होकर करने पर 'राम+सु' रूप बना। इस स्थिति में 'बहुवचने झल्येत्' सूत्र से अकार को एकार आदेश करने पर 'रामे+सु' इस स्थिति में 'आदेश प्रत्यययोः' सूत्र से एकार रूप इण् से पर में सु प्रत्यय के अवयव सकार के स्थान पर मूर्धन्य षकार आदेश होता है। 'स्थानेऽन्तरतमः' सूत्र की सहायता से ईषद्विवृत सकार के स्थान पर ईषद्विवृत षकार आदेश होकर 'रामेषु' पद की सिद्धि होती है।

1.4 हरि शब्द रूपसिद्धि में प्रयुक्त सूत्रों की व्याख्या

सूत्र – जसि च 7/3/109

वृत्ति – ह्रस्वान्तस्याङ्गस्य गुणः। हरयः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधि सूत्र है। इसमें दो पद हैं। 'जसि' यह सप्तम्यन्त पद है। 'च' यह निपात पद है। 'ह्रस्वस्य गुणः' सूत्र की अनुवृत्ति है। 'अङ्गस्य' (6/4/1) इस सूत्र का अधिकार है। 'ह्रस्व' उसका विशेषण है और विशेषणीभूत 'ह्रस्वस्य' से तदन्त विधि होकर 'ह्रस्वान्तस्य अङ्गस्य' ऐसा अर्थ होता है। इस प्रकार ह्रस्वान्त अङ्ग को गुण होता है 'जस्' विभक्ति पर में रहने पर। यह जो गुण होगा, वह 'अलोऽन्त्यस्य' इस परिभाषा सूत्र की सहायता से अन्तिम अक्षर (ह्रस्व) के स्थान में होता है, जैसे– हरि+जस् = हरि+अस्, इस स्थिति में 'जसि च' सूत्र से गुण होकर 'एचोऽयवायावः सूत्र से 'अव्' होकर एवं रुत्व विसर्ग होकर 'हरयः' रूप बनेगा।

सूत्र – ह्रस्वस्य गुणः 7/3/108

वृत्ति – सम्बुद्धौ। हे हरे। हरिम्। हरी। हरीन्

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। इस सूत्र में 'ह्रस्वस्य' यह षष्ठी एकवचन का पद है। 'गुणः' यह प्रथमान्त पद है। इस प्रकार दो पद वाला यह सूत्र है। 'सम्बुद्धौ च' (7/3/106) इस सूत्र से 'सम्बुद्धौ' पद की अनुवृत्ति होती है। 'अङ्गस्य' (6/4/1) सूत्र का अधिकार है तथा 'ह्रस्वस्य' उसका विशेषण है। विशेषण से तदन्त विधि होकर ह्रस्वान्त अङ्ग को गुण होता है। सम्बुद्धि (सम्बोधन का एकवचन) पर में होने पर यह सूत्रार्थ होता है। 'अलोऽन्त्यस्य' परिभाषा से यह गुण अन्तिम अक्षर (ह्रस्व) के स्थान में होता है।

सूत्र – शेषो घ्यसखि 1/4/7

वृत्ति – शेष इति स्पष्टार्थम्। ह्रस्वौ याविदुतौ तदन्तं सखिवर्जं घिसंज्ञम्।

अर्थ एवं व्याख्या – यह संज्ञा सूत्र है। इस सूत्र के द्वारा 'घि' संज्ञा की जाती है। 'शेषः', 'घि', 'असखि' सूत्र में तीन पद हैं। 'यू स्त्र्याख्यौ नदी' (1/4/3) सूत्र से 'यू' पद की अनुवृत्ति

होती है। 'इश्च उश्च' (इवर्णश्च उवर्णश्च) ऐसा विग्रह करके इतरेतर द्वन्द्व करने पर 'यू' पद बनता है। 'न सखि असखि' यहाँ नञ् तत्पुरुष समास है। 'ङिति ह्रस्वश्च' (1/4/6) सूत्र से 'ह्रस्वः' पद की अनुवृत्ति होती है और यह 'यू' प्रत्येक में अन्वित होता है। इस घि संज्ञा से पहले 'यू स्त्र्याख्यौ नदी' (1/4/3) इत्यादि सूत्रों के द्वारा नदी संज्ञा की गई है। 'उक्तादन्यः शेषः' (कहे हुए से बच गया अन्य है, वह शेष कहलाता है)। इस न्याय से उक्त नदी संज्ञक से अन्य शेष है, यह शेष शब्द का तात्पर्य है। इस प्रकार नदी संज्ञक से भिन्न ह्रस्व इवर्ण, उवर्ण तदन्त शब्दस्वरूप की 'घि' संज्ञा होती है, सखि शब्द को छोड़कर। यह सूत्रार्थ है। सखि शब्द भी नदी संज्ञा से भिन्न है इसलिए इसकी भी घि संज्ञा प्राप्त होती है किन्तु असखि निषेध होने से सखि की घि संज्ञा नहीं होती है तथा घि संज्ञा के कार्य भी इससे नहीं होते हैं। हरि शब्द नदी संज्ञा से भिन्न है तथा ह्रस्व इकारान्त है, इसलिए हरि शब्द की घि संज्ञा होती है।

उदाहरण :

1. ह्रस्व इकारान्त– हरि, अरि, रवि, कवि इत्यादि।
2. ह्रस्व उकारान्त– भानु, गुरु, पशु, शिशु इत्यादि।

उक्त सभी शब्दों की घि संज्ञा इस सूत्र के द्वारा होती है।

सूत्र – आङो नाऽस्त्रियाम् 7/3/120

वृत्ति – घेः परस्याङो न स्यादस्त्रियाम्। आङिति टासंज्ञा। हरिणा। हरिभ्याम्। हरिभिः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधिसूत्र है। इसमें 'आङः', 'ना', 'अस्त्रियाम्' ये तीन पद हैं। 'आङः' यह षष्ठ्यन्त पद है। टा की संज्ञा है। अर्थात् 'आङ्' के द्वारा 'टा' का बोध होता है। 'ना' यह प्रथमान्त विधेय पद है। 'अस्त्रियाम्' यह सप्तमी विभक्ति का एकवचन है। 'अच्च घेः' इस सूत्र से 'घेः' पद की अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार स्त्रीलिङ्ग से भिन्न लिङ्ग में घि संज्ञक से पर में जो आङ् (टा) है उसके स्थान में 'ना' आदेश होता है जैसे– इस सूत्र से आ (टा) के स्थान पर ना आदेश होने पर हरि+ना रूप बनता है। नकार को णकार करने पर 'हरिणा' रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – घेर्ङिति 7/3/111

वृत्ति – घिसंज्ञस्य ङिति सुपि गुणः। हरये। हरिभ्याम्। हरिभ्यः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधि सूत्र है। इस सूत्र में 'घेः', 'ङिति' ये दो पद हैं। 'घेः' षष्ठ्यन्त एवं 'ङिति' सप्तम्यन्त पद है। 'सुपि च' (7/3/102) से 'सुपि' की तथा 'ह्रस्वस्य गुणः' से 'गुणः' पद की अनुवृत्ति होती है। इस प्रकार घि संज्ञक को गुण होता है ङित् सुप् पर में होने पर। यह सूत्रार्थ है। ङकार की इत्संज्ञा जिस सुप् में होती है वह ङित् सुप् कहलाता है, जैसे– ङे (ए), ङसि (अस्), ङस् (अस्), ङि (इ) ये चारों ङित् सुप् कहलाते हैं क्योंकि इन चारों के ङकार की इत्संज्ञा 'लशक्वतद्धिते' सूत्र से हो जाती है तथा उसका 'तस्य लोपः' के द्वारा लोप होता है। यह गुण 'अलोऽन्त्यस्य' सूत्र की सहायता से अन्तिम अक्षर (इ, उ) के

स्थान में क्रम से ए और औ के रूप में होता है जैसे– 'हरि+ङे' में प्रकृत सूत्र से गुण होने पर 'हरे+ए' रूप बनता है और 'एचोऽयवायावः' सूत्र से 'अय्' आदेश होकर 'हरये' रूप सिद्ध होता है।

सूत्र – ङसिङसोश्च 6/1/110

वृत्ति – एङो ङसिङसोरति पूर्वरूपमेकादेशः। हरेः 2। हर्योः 2। हरीणाम्।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधि सूत्र है। 'ङसिङसोः', 'च' ये दो पद हैं। 'एङः पदान्तादति' (6/1/109) सूत्र से 'एङः' तथा 'अति' पद की एवं 'अमि पूर्वः' (6/1/107) सूत्र से 'पूर्वः' पद की अनुवृत्ति होती है। 'एकः पूर्वपरयोः' (6/1/84) सूत्र का अधिकार है। इस प्रकार 'एङ्' (ए और ओ) से पर में जो ङसि, औ, ङस् का जो अकार वह यदि पर में हो तो पूर्व (ए और ओ) पर (अकार) के स्थान में पूर्वरूप एक आदेश होता है, जैसे– हरि+ङसि = हरि+अस् इस स्थिति में 'ङसिङसोश्च' सूत्र से ए और अ (पूर्वपर) के स्थान में एकार (ए) एक आदेश होता है एवं 'हरेस्' इस स्थिति में रुत्व विसर्ग होकर 'हरेः' रूप बनता है। यह रूप दो बार बनता है।

सूत्र – अच्च घेः 7/3/119

वृत्ति – इदुद्भ्यामुत्तरस्य ङेरौत्, घेरच्च। हरौ। हरिषु। एवं काव्यादयः।

अर्थ एवं व्याख्या – यह विधि सूत्र है। 'अत्', 'च', 'घेः' ये तीन पद वाला सूत्र है। 'अत्' से ह्रस्व अकार का बोध होता है। 'ङेराम्नद्यानीभ्यः' (7/3/116) से 'ङेः' पद की अनुवृत्ति होती है। 'तस्मादित्युत्तरस्य' सूत्र के अनुरोध से 'उत्तरस्य' इसका लाभ होता है। इस प्रकार इत् (ह्रस्व उकार) उत् (ह्रस्व उकार) से उत्तर (बाद में) ङि प्रत्यय के स्थान में औकार आदेश एवं घि संज्ञक के अन्त्य अक्षर के स्थान में अत् (ह्रस्व अकार) आदेश होता है। जैसे– हरि+ङि, हरि+इ इस स्थिति में 'अच्च घेः' सूत्र से हरि के इकार के स्थान में औकार आदेश होने पर 'हर+औ' इस स्थिति में 'वृद्धिरेचि' सूत्र से वृद्धि होकर 'हरौ' रूप बनता है।

1.5 हरि शब्द की रूपसिद्धि की प्रक्रिया

1) हरिः– हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर प्रथमा एकवचन की विवक्षा में 'सु' प्रत्यय होकर 'हरि+सु' रूप बना। 'सु' के उकार की 'उपदेशेऽजनुनसिक इत्' सूत्र से इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से लोप करने पर 'हरि+स्' रूप बना। 'हरि+स्' इस स्थिति में सकार को रुत्व विसर्ग करने पर 'हरिः' पद की सिद्धि होती है।

2) हरी – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर प्रथमा विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'औ' प्रत्यय लगाने से 'हरि+औ' रूप बना। 'हरि+औ' इस स्थिति में 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' सूत्र से इकार और औकार दोनों वर्णों के स्थान में पूर्व सवर्ण दीर्घ (ईकार) आदेश होकर 'हरी' रूप बनता है।

3) हरयः – हरि शब्द की प्रतिपदिक संज्ञा होकर प्रथमा विभक्ति बहुवचन की विवक्षा में 'जस्' प्रत्यय करने पर 'हरि+जस्' रूप बना। 'चुटू' सूत्र से जकार की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से लोप होने पर 'हरि+अस्' रूप बना। 'हरि+अस्' इस स्थिति में 'यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' सूत्र से हरि की अंग संज्ञा होकर हरि शब्द ह्रस्वान्त अंग कहलाया। 'हरि+अस्' इस स्थिति में 'जसि च' सूत्र से इकार को गुण होकर 'हरे+अस्' रूप बना। अब 'एचोऽयवायावः' सूत्र से एकार को 'अय्' आदेश तथा सकार को रुत्व विसर्ग होकर 'हरयः' पद की सिद्धि हुई।

4) हे हरे! – 'हरि' इस इकारान्त शब्द की अव्युत्पन्न पक्ष में 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्' सूत्र के द्वारा अथवा व्युत्पन्न पक्ष में 'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र के द्वारा प्रातिपदिक संज्ञा होकर, 'स्वौ-जसमौट-छष्टाभ्याम्-भिस्-ङे-भ्याम्-भ्यस्-ङसि-भ्याम्-भ्यस्-ङसोसाम्-ङियोस्-सुप्' सूत्र से प्रथमा एकवचन की विवक्षा होने के कारण हरि प्रातिपदिक से 'सु' प्रत्यय किया = हरि+सु। अनुबन्ध लोप करने पर 'हरि+स्' यह स्थिति होती है। यहाँ पर 'एकवचनं सम्बुद्धिः' सूत्र से 'सु' प्रत्यय की सम्बुद्धि संज्ञा हुई। 'ह्रस्वस्य गुणः' इस सूत्र हरि के इकार के स्थन पर गुण 'ए' होने पर 'हरे+स्' यह स्थिति होती है। 'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः' सूत्र से 'स्' का लोप होकर 'हे हरे!' रूप की सिद्धि होती है।

5) हे हरी! – 'हरि' शब्द की प्रातिपादिक संज्ञा करके सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'औ' विभक्ति होने पर 'हरि+औ' इस अवस्था में 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' सूत्र से 'इ' तथा 'औ' के स्थान पर पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश होकर 'हे हरी!' रूप की सिद्धि होती है।

6) हे हरयः! – 'हरि' शब्द की प्रातिपादिक संज्ञा करके सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति के बहुवचन की विवक्षा में 'जस्' प्रत्यय होकर तथा अनुबन्ध लोप करने पर 'हरि+अस्' इस अवस्था में 'जसि च' सूत्र से हरि के इकार को गुण एकार होने पर 'हरे+अस्' इस अवस्था में 'एचोऽयवायावः' सूत्र से एकार के स्थान पर 'अय्' आदेश होकर 'हर्+अय्+अस्' रूप बना। वर्णसम्मेलन तथा सकार का रुत्व विसर्ग करने पर 'हे हरयः!' रूप की सिद्धि होती है।

7) हरिम् – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति एकवचन की विवक्षा में 'अम्' प्रत्यय लगाने पर 'हरि+अम्' रूप बना। 'हरि+अम्' इस अवस्था में 'अमि पूर्वः' सूत्र से इकार एवं अकार (पूर्वापर) के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश होने पर 'हरिम्' पद सिद्ध हुआ।

8) हरी – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'औ' प्रत्यय लगाने से 'हरि+औ' रूप बना। 'हरि+औ' इस स्थिति में 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' सूत्र से इकार और औकार दोनों वर्णों के स्थान में पूर्व सवर्ण दीर्घ (ईकार) आदेश होकर 'हरी' रूप बनता है।

9) हरीन् – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर द्वितीया विभक्ति बहुवचन की विवक्षा में 'शस्' प्रत्यय का विधान करने पर 'हरि+शस्' रूप बना। 'शस्' के शकार की इत्संज्ञा तथा लोप होकर 'हरि+अस्' रूप बना। 'हरि+अस्' इस स्थिति में 'प्रथमयोः पूर्वसवर्णः' सूत्र से पूर्वसवर्ण दीर्घ एकादेश होकर (इकार एवं अकार के स्थान पर), 'हरीस्' इस अवस्था में 'तस्माच्छसो नः पुंसि' सूत्र से सकार के स्थान पर नकार आदेश करने पर 'हरीन्' रूप सिद्ध हुआ।

10) हरिणा – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर तृतीया विभक्ति एकवचन की विवक्षा में 'टा' प्रत्यय करने पर 'हरि+टा' रूप बना। 'चुटू' सूत्र से टकार की इत्संज्ञा तथा 'तस्य लोपः' से लोप करने पर 'हरि+आ' रूप बना। 'हरि+आ' इस स्थिति में 'शेषो घ्यसखि' सूत्र से हरि शब्द की 'घि' संज्ञा तथा 'आङो नाऽस्त्रियाम्' इस सूत्र से 'आ' के स्थान पर 'ना' आदेश होने पर 'हरि+ना' रूप बना। 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से नकार के स्थान पर णकार आदेश होकर 'हरिणा' रूप सिद्ध हुआ।

11) हरिभ्याम् – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर तृतीया विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'भ्याम्' प्रत्यय लगाने पर 'हरि+भ्याम्' रूप बना। वर्णसम्मेलन करने पर 'हरिभ्याम्' पद की सिद्धि हुई।

12) हरिभिः – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर तृतीया विभक्ति बहुवचन की विवक्षा में 'भिस्' प्रत्यय लगाने पर 'हरि+भिस्' रूप बना। भिस् के सकार को रुत्व विसर्ग तथा वर्णसम्मेलन करने पर 'हरिभिः' रूप सिद्ध हुआ।

13) हरये – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति एकवचन की विवक्षा में 'ङे' प्रत्यय तथा अनुबन्ध लोप करने पर 'हरि+ए' की स्थिति बनी। 'हरि+ए' इस स्थिति में 'शेषो घ्यसखि' सूत्र से हरि शब्द की 'घि' संज्ञा तथा 'घेर्ङिति' सूत्र से गुण होने पर 'हरे+ए' इस स्थिति में 'एचोऽयवायावः' सूत्र से 'अय्' आदेश और वर्णसम्मेलन करने पर 'हरये' रूप की सिद्धि होती है।

14) हरिभ्याम् – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'भ्याम्' प्रत्यय लगाने पर 'हरि+भ्याम्' रूप बना। वर्णसम्मेलन करने पर 'हरिभ्याम्' पद की सिद्धि हुई।

15) हरिभ्यः – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर चतुर्थी विभक्ति बहुवचन की विवक्षा 'भ्यस्' प्रत्यय करने पर 'हरि+भ्यस्' रूप बना। भ्यस् के सकार को रुत्व विसर्ग करने पर 'हरिभ्यः' रूप की सिद्ध हुई।

16) हरेः – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर पंचमी विभक्ति एकवचन की विवक्षा में 'ङसि' प्रत्यय तथा अनुबन्ध लोप करने पर 'हरि+अस्' रूप बना। 'हरि+अस्' इस स्थिति में 'घेर्ङिति' सूत्र से गुण करने पर 'हरे+अस्' रूप बना। 'हरे+अस्' की स्थिति में 'ङसिङसोश्च'

सूत्र से 'ए' और 'अ' (पूर्व तथा पर) के स्थान पर एकार (ए) एक आदेश होकर 'हरेस्' रूप बना। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर 'हरेः' रूप सिद्ध हुआ।

17) हरिभ्याम् – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर पंचमी विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'भ्याम्' प्रत्यय लगाने पर 'हरि+भ्याम्' रूप बना। वर्णसम्मेलन करने पर 'हरिभ्याम्' पद की सिद्धि हुई।

18) हरिभ्यः – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर पंचमी विभक्ति बहुवचन की विवक्षा 'भ्यस्' प्रत्यय करने पर 'हरि+भ्यस्' रूप बना। भ्यस् के सकार को रुत्व विसर्ग करने पर 'हरिभ्यः' रूप की सिद्ध हुई।

19) हरेः – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर षष्ठी विभक्ति एकवचन की विवक्षा में 'ङस्' प्रत्यय तथा अनुबन्ध लोप करने पर हरि+अस् रूप बना। 'हरि+अस्' इस स्थिति में 'घेर्ङिति' सूत्र से गुण करने पर 'हरे+अस्' रूप बना। 'हरे+अस्' की स्थिति में 'ङसिङसोश्च' सूत्र से 'ए' और 'अ' (पूर्व तथा पर) के स्थान पर एकार (ए) एक आदेश होकर 'हरेस्' रूप बना। सकार को रुत्व विसर्ग करने पर 'हरेः' रूप सिद्ध हुआ।

20) हर्योः – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर षष्ठी विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'ओस्' प्रत्यय करने पर 'हरि+ओस्' रूप बना। 'हरि+ओस्' इस स्थिति में 'इकोयणचि' सूत्र से इकार के स्थान पर यकार आदेश तथा सकार को रुत्व विसर्ग करने पर 'हर्योः' पद की सिद्धि हुई।

20) हरीणाम् – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर षष्ठी विभक्ति बहुवचन की विवक्षा में 'आम्' प्रत्यय करने पर 'हरि+आम्' रूप बना। 'हरि+आम्' इस स्थिति में 'ह्रस्वनद्यापो नुट्' सूत्र से 'नुट्' (न) का आगम करने पर 'हरि+नाम्' इस स्थिति में 'नामि' सूत्र से 'इ' के स्थान पर दीर्घ (ई) करने पर तथा 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' सूत्र से णत्व करने पर 'हरीणाम्' पद की सिद्धि होती है।

21) हरौ – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होने पर सप्तमी विभक्ति एकवचन की विवक्षा में 'ङि' प्रत्यय तथा अनुबन्धलोप करने पर 'हरि+इ' रूप बना। 'हरि+इ' इस स्थिति में 'शेषोघ्यसखि' सूत्र से हरि की 'घि' संज्ञा होने पर 'अच्च घेः' सूत्र से हरि के इकार के स्थान पर अकार एवं 'ङि' प्रत्यय के इकार के स्थान पर औकार आदेश होने पर 'हर+औ' इस स्थिति में 'वृद्धिरेचि' सूत्र से वृद्धि होने पर हरौ रूप सिद्ध होता है।

22) हर्योः – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर सप्तमी विभक्ति द्विवचन की विवक्षा में 'ओस्' प्रत्यय करने पर 'हरि+ओस्' रूप बना। 'हरि+ओस्' इस स्थिति में 'इकोयणचि' सूत्र से इकार के स्थान पर यकार आदेश तथा सकार को रुत्व विसर्ग करने पर 'हर्योः' पद की सिद्धि हुई।

23) हरिषु – हरि शब्द की प्रातिपदिक संज्ञा होकर सप्तमी विभक्ति बहुवचन की विवक्षा में 'सुप्' प्रत्यय का विधान करने पर 'हरि+सुप्' रूप बना। अनुबन्ध लोप होकर 'हरि+सु' रूप

बना। 'हरि+सु' इस स्थिति में 'आदेश प्रत्यययोः' सूत्र से सकार के स्थान पर मूर्धन्य षकार आदेश करने पर 'हरिषु' रूप सिद्ध हुआ।

1.6 सारांश

प्रिय छात्रों! 'व्याकरण' पाठ्यक्रम की यह इकाई अजन्त पुँल्लिङ्ग शब्द रूप राम और हरि से सम्बन्धित है। इस इकाई में आपने राम और हरि शब्द के रूप की सिद्धि में लगने वाले सूत्रों 'अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्', 'कृत्तद्धितसमासाश्च', 'ङयाप्प्रातिपदिकात्', 'सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ', 'अट्कुप्वाङ्नुम्व्यवायेऽपि' आदि के विषय में अध्ययन किया। अध्ययन के इस क्रम में आपने राम और हरि शब्द रूपों की सिद्धि प्रक्रिया का भी ज्ञान किया। इस इकाई के माध्यम से आपने राम और हरि शब्द रूपों की सिद्धि में लगने वाले सामान्य सूत्रों एवं विशिष्ट सूत्रों के साथ-साथ सु, औ, जस् आदि 21 प्रत्ययों की प्रक्रिया को भी समझा।

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. वरदराजाचार्य, मूल लघुसिद्धान्तकौमुदी, गोरखपुर, गीताप्रेस।
2. वरदराजाचार्य, हिन्दी व्याख्या गोविन्दाचार्य, लघुसिद्धान्तकौमुदी, दिल्ली, चौखम्भा सुरभारती।
3. वरदराजाचार्य, हिन्दी व्याख्या शास्त्री, धरानन्द, लघुसिद्धान्तकौमुदी, दिल्ली, मोतीलाल बनारसी दास।
4. वरदराजाचार्य, हिन्दी व्याख्या शास्त्री, भीमसेन, लघुसिद्धान्तकौमुदी, (भाग–1–6), दिल्ली, भैमी प्रकाशन।
5. शास्त्री, चारुदेव. व्याकरण चन्द्रोदय, (भाग–1–3), दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास।
6. वरदराजाचार्य, सम्पा. एवं हिन्दी सिंह, सत्यपाल, लघुसिद्धान्तकौमुदी, दिल्ली, शिवालिक पब्लिकेशन।
7. Apte, V.S., The Students* Guide to Sanskrit Composition, Chowkhamba Sanskrit Series, Varanasi.
8. Kale, M.R., Higher Sanskrit Grammar, MLBD, Delhi.
9. Kanshi Ram, Laghusiddhantkaumudi, (Vol- 1&3), MLBD, Delhi, 2009.

1.8 अभ्यास प्रश्न

1) **'एङ्ह्रस्वात् सम्बुद्धेः'** सूत्र की व्याख्या कीजिए।

2) 'रामाणाम्' पद की रूपसिद्धि की प्रक्रिया लिखिए।

3) '**शेषो घ्यसखि**' सूत्र की व्याख्या कीजिए।

4) 'हरये' पद की रूपसिद्धि की प्रक्रिया लिखिए।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY